REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

जल संरक्षण ही पर्यावरण संरक्षण

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का
सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)
शास.अग्रसेन महाविद्यालय बिल्हा
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना :

''जल ही जीवन है'' यह उचित परम सत्य है। प्राकृतिक संसाधनों में या प्राकृतिक संसाधनों के रूप में जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। सभी प्राकृतिक संसाधनों में जल के अतिरिक्त अन्य कोई महत्वपूर्ण संसाधन नहीं है। जल की उपलब्धता, न्यूवता व अनुपलब्धता अन्य प्राकृतिक संसाधनों को भी प्रभावित करती है।

पर्यावरण के प्रमुख चार भाग हैं–स्थल, जल, वायु एवं जीव। ये चारों तत्व संतुलित रहते हैं, तब पर्यावरण संतुलित रहता है। जब–जब विकास के नाम पर इन चारों तत्वों को छेड़ा गया, तभी एक बड़ा असंतुलन या प्रदूषण का जन्म होता गया है, जो कि समग्र मानव समाज के लिये प्रतिकूल व विनाशकारी प्रभाव छोड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान् समय में जल संसाधनों के संरक्षण के प्रति व्यापक दृष्टिकोंण को अपनाना, पर्यावरण संरक्षण के लिये यह सोचना पड़ेगा कि आधुनिक व वैज्ञानिक प्रणालियों का भी सहारा लेना होगा।

आधारभूत पंचतत्वों में से एक जल हमारे जीवन का आधार है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए कवि रहीम ने कहा – 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न उबरै मोती, मानुष चून'। 'यदि जल ना होता, तो सृष्टि का निर्माण भी संभव ना होता। यही कारण है कि यह एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है, जिसका कोई मोल नहीं है। जीवन के लिए जल की महत्ता को इसी से समझा जा सकता है कि बड़ी–बड़ी सभ्यताएं नदियों के तट पर ही विकसित हुई और अधिकांश प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही बसे। जल की उपादेयता को ध्यान में रखकर यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सिर्फ जल का संरक्षण करें, बल्कि उसे प्रदूषित होने से भी बचायें। ऋग्वेद में जल को अमृत के समतुल्य बताते हुए कहा गया है कि – अप्सु अंतः अमृतं अप्सु भेषजं।

जल संरक्षण के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है। जब पर्यावरण बचेगा, तभी जल बचेगा। पर्यावरण असंतुलन भी जल संकट का एक बड़ा कारण है, इसे हम उदाहरण के रूप में लें तो हिमालय के ग्लेशियर मीठे पानी के अच्छे स्त्रोत हैं। ये बिगड़ते पर्यावरण के कारण सिकुड़ने लगे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार वर्ष 2030 तक ये ग्लेशियर काफी अधिक सिकुड़ जाते हैं। इसी तरह हमें जल क्षति भी होगी। पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें वानिकी को नष्ट होने से बचाना होगा।

जल संरक्षण ही पर्यावरण संरक्षण

- जल का स्त्रोत सीमित है। नये स्त्रोत हैं नहीं, ऐसे में जल स्त्रोतों को संरक्षित रखकर एवं जल का संचय कर हम जल संकट का मुकाबला कर सकते हैं।
- यदि वर्षा जल का समुचित संग्रह हो और जल की प्रत्येक गुण को अनमोल मानकर उसका संरक्षण किया जाये तो कोई कारण नहीं है कि वैश्विक जल संकट का समाधान न ढूंढा जा सके।
- विभिन्न फसलों के लिए पानी की कम खपत वाले तथा अधिक पैदावार वाले बीजों के लिए अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- प्रत्येक फसल के लिए इष्टतम् जल का जल की आवश्यकता का निर्धारण किया जाना चाहिए और तद्नुसार सिंचाई की योजना बनानी चाहिए। सिंचाई कार्यों के लिए स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई जैसे पानी की कम खपत वाले प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- एक भारतीय नागरिक एक वर्ष में औसतन 470 घनमीटर जल का उपयोग करता है। वर्षा वर्ष 1955 में मीठे पानी की प्रतिवर्ष वार्षिक उपलब्धता 5277 घनमीटर थी, जो कि वर्ष 1990 में घटकर 2464 रह गई है। वर्तमान में यह प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष 2000 घनमीटर हो चुकी है। वर्ष 2025 तक हमारे देश में प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष जल की उपलब्धता घटकर 1000 घनमीटर होने की संभावना है, जिसे वैज्ञानिक भीषण जल संकट की स्थिति मान रहे हैं।

- ❖ जहां तक संभव हो सके ऐसे खाद्य उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए, जिनमें पानी का कम प्रयोग होता हो। खाद्य पदार्थों की अनावश्यक बर्बादी में कमी लाना भी आवश्यक है।
- ❖ वर्षा जल प्रबंधन और मानसून प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाये और इससे जुड़े शोध कार्यों को प्रोत्साहित किया जाये। जल शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये।
- ❖ पानी के इस्तेमाल में हमें मितव्ययी बनाना होगा। छोटे–छोटे उपाय कर जल की बड़ी बचत की जा सकता है। मसलन, हम दैनिक जीवन में पानी की बर्बादी कतई ना करें और एक–एक बूंद पानी की बचत करें।
- ❖ प्रदूषित जल का उचित उपचार किया जाये तथा इस उपचारित जल की आपूर्ति औद्योगिक इकाईयों को की जाए।
- ❖ जनसंख्या बढ़ने से जल उपभोग भी बढ़ता है। ऐसे विशिष्ट जल उपलब्धता (प्रति व्यक्ति नवीनीकृत जल संसाधन की उपलब्धता) कम हो जाती है। अतएव इस परिप्रेक्ष्य में हमें जनसंख्या नियंत्रण पर भी ध्यान देना होगा।
- ❖ हमें पानी के कुशल उपयोग पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। जल वितरण में असमानता को दूर करने के लिए जल कानून बनानें होंगे। भू–जल के दोहन को रोकने के लिए भी कानून बनाने होंगे।
- ❖ जल प्रबंधन और जल संरक्षण की दिशा में जल जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास हो। जल प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाये तथा जल संकट से निपटने के लिए इनकी सेवायें ली जाए। साथ ही साथ जल प्रबंधन व शोध कार्यों के लिए निवेश को बढ़ाया जाए।

जल जीवन का आधार है और यदि जल को बचाना है तो हमें जल संरक्षण और संचय के उपाय करने ही होंगे। जल की उपलब्धता घट रही है और मारामारी बढ़ रही है। ऐसे में जल संकट का सही समाधान खोजना प्रत्येक मनुष्य का दायित्व बनता है। यह हमारी राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी बनती है और हम अंर्तराष्ट्रीय समुदाय से भी ऐसी ही जिम्मेदारी की अपेक्षा करते हैं।

REFERENCES (संदर्भ–सूची) :–

1. डॉ. रतन जोशी/पर्यावरण अध्ययन/साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा/पृष्ठ 28, 29, 30
2. दैनिक मासिक पत्रिका कुरूक्षेत्र मई 2016/पृष्ठ 19, 20

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का
सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र) शास.अग्रसेन महाविद्यालय बिल्हा जिला–बिलासपुर (छ.ग.)